

Editorial

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा हमेशा से ही एक बहुआयामी क्षेत्र रही है, जिसे उसके भौगोलिक स्थिति, विविध सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने और निरंतर बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य ने प्रभावित किया है। 21वीं सदी में आगे बढ़ते हुए, देश अवसरों और चुनौतियों के एक चौराहे पर खड़ा है, जो इसकी संप्रभुता की रक्षा करने और नागरिकों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण की मांग करता है।

दक्षिण एशिया में भारत की रणनीतिक स्थिति इसे क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाती है। चीन और पाकिस्तान जैसे परमाणु हथियारों से लैस पड़ोसियों से घिरा भारत पारंपरिक और हाइब्रिड दोनों प्रकार के खतरों का सामना करता है। चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) और पाकिस्तान के साथ नियंत्रण रेखा (एलओसी) जैसे अनसुलझे सीमा विवाद तनाव के स्रोत बने हुए हैं। पूर्वी लद्दाख में हालिया झड़पें और जम्मू-कश्मीर में चल रहा छद्म युद्ध मजबूत सैन्य तैयारी और कूटनीतिक कौशल की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

इसके साथ ही, क्वाड के सदस्य के रूप में भारत की भूमिका और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसका विस्तार बढ़ते चीनी प्रभाव का संतुलन साधने के उसके इरादे को दर्शाता है। हालांकि, इस रणनीतिक गठबंधन को सावधानीपूर्वक प्रबंधित करना होगा ताकि किसी एक गुट पर अत्यधिक निर्भरता से बचा जा सके और भारत की विदेश नीति स्वतंत्र और बहुआयामी बनी रहे।

आंतरिक रूप से, भारत आतंकवाद और विद्रोहों से लेकर सांप्रदायिक तनाव और साइबर खतरों तक की चुनौतियों का सामना करता है। पूर्वोत्तर में विद्रोह और वामपंथी उग्रवाद काफी हद तक नियंत्रित हो गए हैं, लेकिन ये अभी भी संभावित संकट के क्षेत्र बने हुए हैं। खासकर पाकिस्तान से होने वाला सीमा पार आतंकवाद स्थिरता के लिए खतरा बना हुआ है।

इसके अलावा, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का बढ़ना भारत की सामाजिक संरचना के लिए एक गंभीर खतरा है, जो इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न हिस्सा है। एक विभाजित

समाज एक कमजोर समाज होता है; इसलिए, सद्भाव को बढ़ावा देना नीति निर्माताओं के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए।

भारत के तेजी से डिजिटलाइजेशन के साथ, साइबर क्षेत्र राष्ट्रीय सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। महत्वपूर्ण ढांचों पर रैंसमवेयर हमलों से लेकर जासूसी और गलत सूचना अभियानों तक, साइबरस्पेस में चुनौतियां व्यापक और बदलती हुई हैं। राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति जैसे सुदृढ़ साइबर सुरक्षा ढांचे बनाने पर सरकार का जोर सही दिशा में एक कदम है। हालांकि, इसे तेजी और व्यापकता के साथ लागू करना होगा, जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग शामिल हो।

ऊर्जा सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है। बढ़ती ऊर्जा जरूरतों के साथ, भारत को अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने, नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करने और अस्थिर तेल बाजारों पर निर्भरता कम करने की आवश्यकता है। स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण न केवल एक पर्यावरणीय अनिवार्यता है बल्कि एक रणनीतिक आवश्यकता भी है।

भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा को अलग-थलग दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता; इसके लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो सैन्य तैयारी, आर्थिक लचीलापन, सामाजिक एकता और तकनीकी नवाचार को एकीकृत करे। नीति निर्माताओं को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चिंताओं के बीच संतुलन बनाना होगा, यह पहचानते हुए कि खतरे अब केवल युद्धक्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि साइबरस्पेस, अर्थव्यवस्था और सार्वजनिक स्वास्थ्य तक भी फैले हुए हैं।

गठबंधनों को मजबूत करना, नवाचार को प्रोत्साहित करना और आंतरिक कमजोरियों को दूर करना महत्वपूर्ण होगा। सबसे बढ़कर, भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसकी विकास और सुरक्षा रणनीतियां समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ हों। केवल तभी देश एक तेजी से आपस में जुड़े और जटिल विश्व में अपने भविष्य की सही मायने में रक्षा कर सकेगा।

प्रो. सरोज कुमार महानंदा